जनवरी २०१४

कीमत ₹ १२/-

दादा भगवान परिवार का

अक्रम एक्सप्रेस

विरोधी उपकारी

संपादकीय

बालमित्रों,

कई बार ऐसा होता है न कि यदि कोई तुम्हारे बारे में बुरा बोले या तुम्हारी कोई गलती निकाले या फिर तुम्हें नीचा दिखाए, तब तुम क्या करोगे?

हाँ, तो चिढ़ ही जाते हो न। कोई ऐसा करे तो किसे अच्छा लगेगा।

सामान्यतः सभी को ऐसा ही लगता है। यही तो फर्क है, अपने में और महापुरुषों में। महापुरुष ऐसे मौके का फायदा उठाकर प्रगति करते हैं।

परम पूज्य दादाश्री हमेशा कहते थे कि "कोई विरोध करे तो उसका उपकार मानना।" उनके पास ऐसी कौन सी समझ होगी कि जिससे वे विरोध करनेवालों का उपकार मान सकते थे!

इस अंक को पढ़कर हमें भी वह समझ और शक्ति प्राप्त हो, यही भावना...

- डिम्पल महेता

विरोधी उपकारी

अनुक्रमणिका

ज्ञानी कहते हैं... ३
यह तो नई ही बात! ४
चैलेन्ज ६
अल्फ्रेड नोबेल ९
चलो खेलें... १०
सूरदास १२
खुली आँखों का सपना १४
अपने आपको परखकर देखो ! १८
GNC Day की झलक २०

संपादक :
डिम्पल महेता
वर्ष : १ अंक : १०
अखंड क्रमांक : १०
जनवरी २०१४

संपर्क सूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला. गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन : (०७९) ३९८३०१००

Printed & Published by

Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

Printed at
Amba Offset
Basement, Parshvanath Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

अक्रम एक्सप्रेस

वार्षिक सदस्यता(हिन्दी)
भारत :१२५ रुपये
यु.एस.ए. :१५ डॉलर
यु.के. :१० पाउन्ड
पाँच वर्ष
भारत : ५०० रुपये
यु.एस.ए. : ६० डॉलर
यु.के. : ४० पाउन्ड
D.D/ M.O 'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम पर भेजें।

ज्ञानी कहते हैं...

प्रश्नकर्ता : हम यह तो समझ गए हैं कि हमें दूसरों का पॉज़िटिव ही देखना चाहिए लेकिन जब कोई मुझे बुरा कहता है, तब उसके प्रति बहुत नेगेटिव हो जाता है और गुस्सा आ जाता है। मन ही मन में उसके लिए बहुत बुरा बोल देती हूँ। तो इसका समाधान लाने के लिए क्या करें?

दीपकभाई : तुम्हारी कोई सहेली कहे कि "तुम चोर हो" तो क्या उसके साथ झगड़ा करना चाहिए? उससे पूछना चाहिए कि "ऐसा क्यों लग रहा है तुझे?" तो वह कहेगी कि "तेरे पीछे कागज़ चिपका हुआ है कि यह चोर है"। ऐसा कागज़ पीछे चिपका हुआ हो और हमें पता नहीं हो, ऐसा हो सकता है न? फिर हम कागज़ को निकाल देंगे। अब यदि ऐसा हो तो क्या हम उसके साथ झगड़ेंगे या फिर उसका उपकार मानेंगे?

प्रश्नकर्ता : उपकार मानेंगे।

दीपकभाई : यह आईना होता है न! यदि हमारे कान पर कुछ कचरा लगा हो और आईने में दिखाई दे तो क्या हम आईने के साथ झगड़ेंगे? उसे तोड़ देंगे? उसकी गलती निकालेंगे? कि मेरी गलती क्यों निकाल रहे हो? मैं इतनी सुंदर हूँ फिर भी। क्या हम आईने के साथ ऐसे झगड़ेंगे? या कान पर से कचरा हटा देंगे। आईने का उपकार मानेंगे न? उसी तरह यदि कोई हमें बुरा कहे तो हमें पूछना चाहिए कि "मुझ में कहाँ बुराई लगी तुझे?" तो वह कहेगी कि "बस, तुम किसी के साथ बात नहीं करती, यदि बात करती हो तो अपनी मनमानी ही करती हो।" फिर कहना कि "ओह अच्छा हुआ मुझे बताया। अब मैं सुधार लूँगी।" ऐसा करेंगे तो मित्रता टिकेगी और अपनी भूल सुधरेगी। ऐसा कर सकते हैं न?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दीपकभाई : और यदि वह व्यक्ति हमें कुछ बुरा कहकर चला जाए और अगर हमने उसके बारे में मन में कुछ बुरा सोचा होगा तो उसमें उसका नुकसान नहीं है। अपने ऊपर ही आवरण आएँगे। इसलिए उसके लिए हमें बुरा नहीं सोचना चाहिए। बल्कि हमें पता लगाना चाहिए कि वह हमें ऐसा क्यों कह रही है। मेरी ही कुछ गलती है, जो वह मुझे बता रही है। इस जगत् के लोग अपने लिए आईने के समान है। हमें उनका उपकार मानना चाहिए कि "अच्छा किया, मुझे बताया।" कर पाओगी ऐसा?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दीपकभाई : मतलब कोई बुरा बोले तो,

१) हमें पता लगाना चाहिए कि हमारी गलती कहाँ है?

२) फिर अपनी गलती कैसे सुधार सकते हैं?

३) उसका उपकार मानना चाहिए कि "तुमने मेरी मदद की।"

४) यदि कुछ बुरा सोचा हो तो उसका प्रतिक्रमण करना चाहिए।

यह तो नई ही बात!

जिसे प्रगति करनी है, उसके लिए रुकावट डालनेवाले, निंदा करनेवाले, विरोध करनेवाले महान उपकारी हैं। क्योंकि उनके पास दृष्टि है। गलती दिखा सकते हैं और होती है तभी दिखाते हैं न।

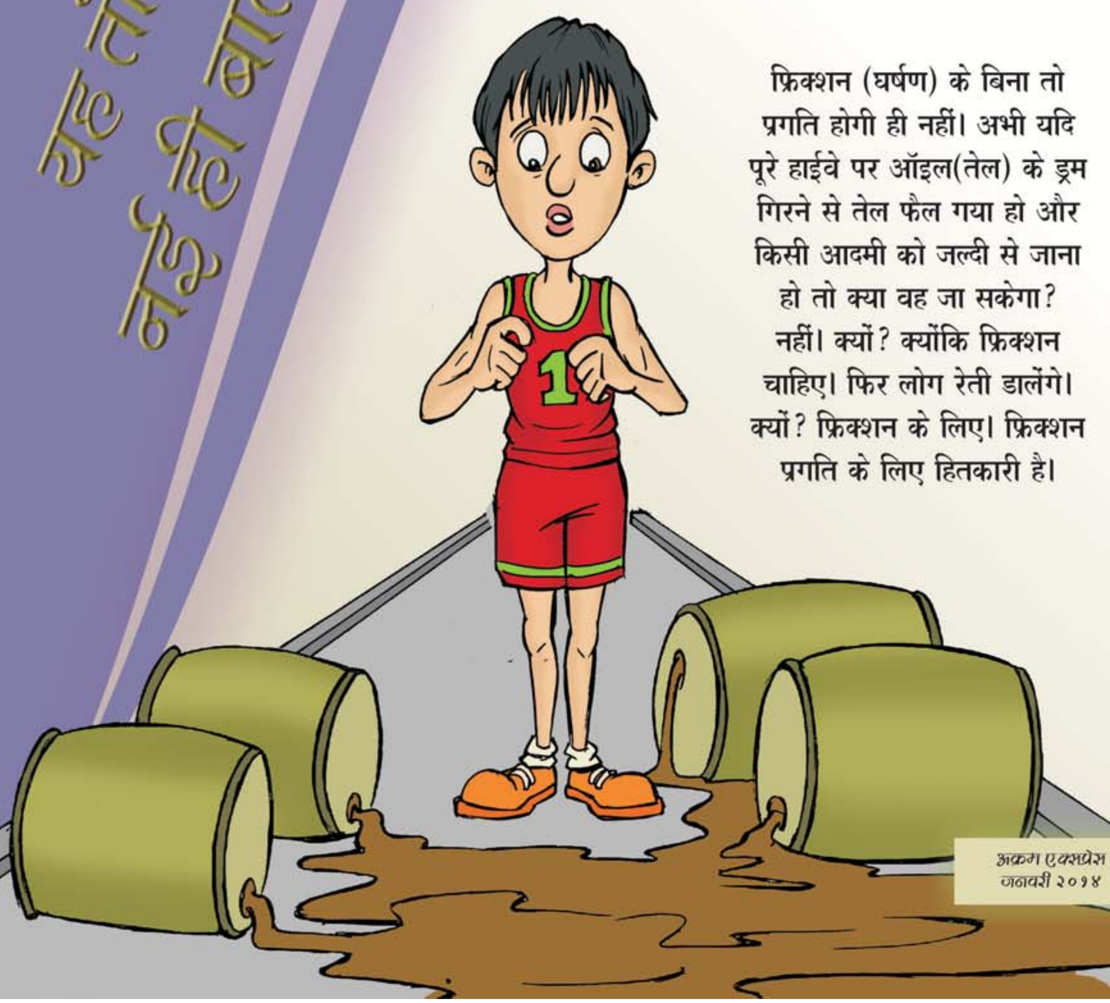

फ्रिक्शन (घर्षण) के बिना तो प्रगति होगी ही नहीं। अभी यदि पूरे हाईवे पर ऑइल(तेल) के ड्रम गिरने से तेल फैल गया हो और किसी आदमी को जल्दी से जाना हो तो क्या वह जा सकेगा? नहीं। क्यों? क्योंकि फ्रिक्शन चाहिए। फिर लोग रेती डालेंगे। क्यों? फ्रिक्शन के लिए। फ्रिक्शन प्रगति के लिए हितकारी है।

कई ऐसे बड़े-बड़े राज्य हैं, जिन्होंने निरीक्षण किया है कि हम जनता से मत लेते हैं और जो लोग असहमति दिखाएँ, उस पर ध्यान देते हैं। और उसे ध्यान में रखकर पूरी डिज़ाइन बनाते हैं कि हम कहाँ सुधार करें कि जिससे हमारा ऑर्गेनाइज़ेशन बेस्ट बन सके। जहाँ-जहाँ विरोध को स्वीकार किया जाता है, वह संस्था या समाज आदर्श बनकर सामने आता है।

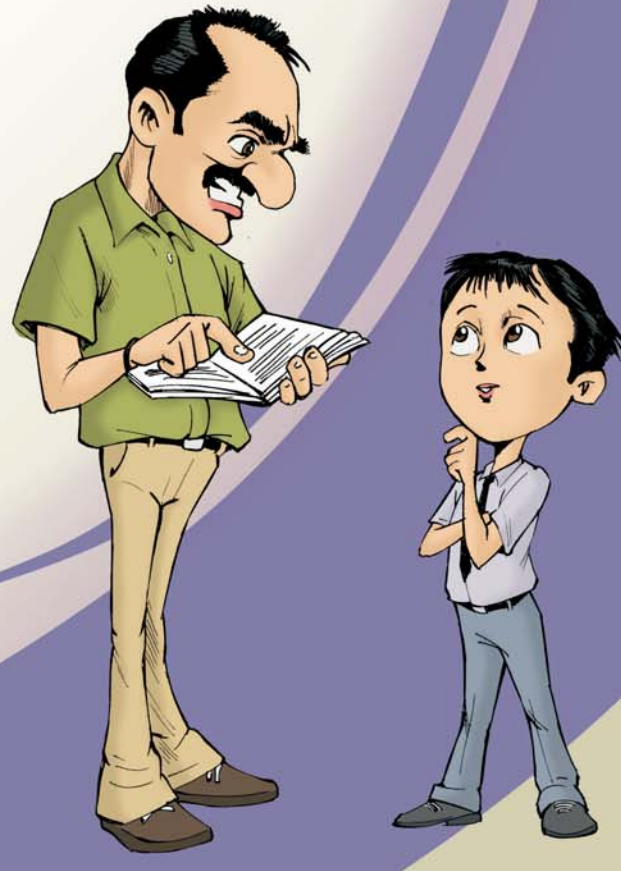

विरोध यानी क्या? कि उसे पॉज़िटिव लेकर सॉल्यूशन लाएँ। हमें विरोध को स्वीकार करना चाहिए और समझपूर्वक हल लाना चाहिए। उसी में अपनी प्रगति है।

चैलेन्ज

आज वैभवी बहुत खुश थी। स्कूल से आकर बैग सोफे पर रखा और मम्मी से लिपट गई। मम्मी से लिपटकर कहने लगी, "मम्मी आज मैं बहुत ही खुश हूँ। हमारे डान्स टीचर ने सबके बीच मेरी इतनी तारीफ की कि बात ही मत पूछो। अगले महीने होनेवाले इन्टर स्कूल डान्स कॉम्पिटिशन के लिए उन्होंने मेरा सिलेक्शन किया है। आपको मालूम है मम्मी, कितने सारे बच्चों में से मेरा सिलेक्शन हुआ है। मम्मी, आपको बहुत तैयारी करवानी पड़ेगी। आप मुझे सिखाओगी न?"

बचपन से ही वैभवी की मम्मी ने उसे कत्थक सीखने के लिए बहुत प्रोत्साहित किया था। वे खुद भी कत्थक में पारंगत थी। उनकी बहुत इच्छा थी कि वैभवी स्टेज शो करे। और आज वैभवी को वह मौका मिल गया इसलिए उन्हें बहुत खुशी हो रही थी।

स्कूल का होमवर्क खत्म करके रोज़ वैभवी डान्स क्लास में जाती। बिल्कुल भी थके बिना, उत्साह से डान्स प्रैक्टिस करती। घर आकर मम्मी को अपने डान्स स्टेप्स दिखाती।

"वैभवी तुम्हारी मुद्रा ठीक नहीं है," मम्मी वैभवी को टोकती। इस तरह मम्मी कभी उसकी मुद्रा तो कभी उसके हाव भाव सुधारने के लिए सलाह देती।

एक दिन वैभवी मम्मी के टोकने पर बहुत झुंझला गई। चिढ़कर कहने लगी, "मेरी डान्स टीचर और मेरे सभी फ्रेन्ड्स मेरी तारीफ करते हैं। और आपको हमेशा मुझ में गलतियाँ ही दिखती हैं। आप हमेशा मुझ में डिफेक्ट ही ढूँढती रहती हो।"

वैभवी के ऐसे बरताव से मम्मी को थोड़ा झटका लगा। थोड़ी देर शांत रहने के बाद मम्मी ने उससे कहा, "बेटा, मैं तुम्हारे डिफेक्ट नहीं ढूँढ रही हूँ, तुम्हें परफेक्ट बनाने की कोशिश कर रही हूँ।"

लेकिन वैभवी पर मम्मी की बात का कुछ असर नहीं हुआ। वह गुस्से में वहाँ से चली गई। रात हुई, वैभवी कम्प्यूटर पर इन्टरनेट सर्फ कर रही थी। मम्मी पलंग पर बैठे-बैठे एक किताब पढ़ रही थी। अचानक मम्मी ने किताब बंद करके वैभवी से कहा, "शाम को जो अपनी बात हुई थी, उस पर मैं सोच रही थी। मुझे एक कहानी याद आई है, तुम सुनोगी?"

चिढ़कर वैभवी ने "हाँ" कहा और मम्मी ने कहानी शुरू की।

"एक गाँव में एक संत रहते थे। दलपत के सिवाय पूरे गाँव को उन संत पर बहुत पूज्य भाव था। जब पूरा गाँव संत की तारीफ करता, तब दलपत उनकी बात में कुछ न कुछ गलती निकालकर उनका विरोध करता।"

जब दलपत का देहांत हो गया, तब वे संत बहुत दुखी हो गए। यह देखकर किसी ने संत से कहा, "दलपत तो आपका इतना बड़ा विरोधी था। उसके गुज़र जाने से आपको इतना दुःख क्यों हो रहा है?"

संत ने जवाब दिया, "मैं उसके लिए नहीं बल्कि खुद के लिए दुखी हूँ। दलपत के विरोध और प्रतिकार के बिना मेरी प्रगति रुक जाएगी।"

वैभवी के सिर पर हाथ फिराकर मम्मी बोली, "इसलिए बेटा, यदि तुम भी उन संत के दृष्टिकोण को अपनाओगी और किसी भी विरोध या सलाह सूचन या फिर टोकने को चैलेन्ज की तरह लेकर, उस चैलेन्ज को पार करके बाहर निकलोगी तो उसी से तुम्हारी प्रोगेस होगी। और मैं बस यही चाहती हूँ कि तुम्हारी प्रोग्रेस हो।"

यह सुनने के बाद भी वैभवी को मम्मी की टोक-टोक अच्छी नहीं लगती थी। लेकिन मम्मी के टोकने पर ध्यान देने से उसकी परफोमन्स में सुधार भी हो रहा था। और इस तरह से दिन बीतने लगे। कॉम्पिटिशन का दिन आ गया।

कॉम्पिटिशन के सेकन्ड लास्ट राउन्ड में सभी जजों ने वैभवी को ९ पोइन्टस दिए, सिवाय एक जज के। उन्होंने वैभवी

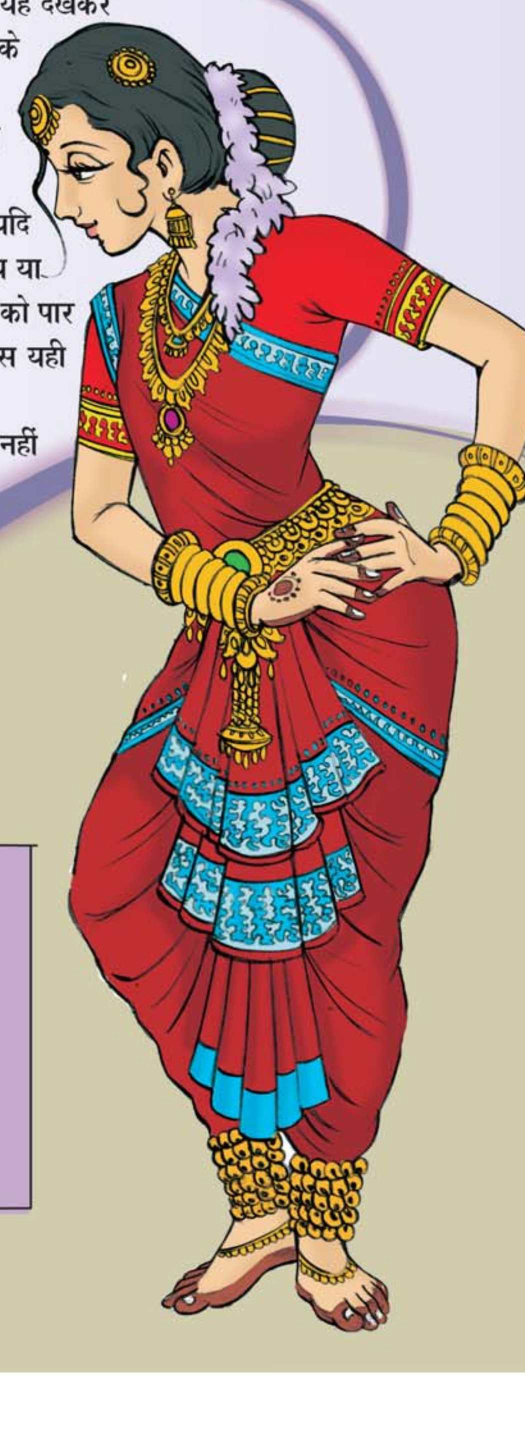

को ६ पोइन्टस दिए। उनके स्कोर से वैभवी बहुत नाराज हो गई। उसने सोचा, सभी जजों ने मेरे डान्स की तारीफ की और इन्होंने मुझे ६ पोइन्टस देकर मेरा अपमान किया है। मुझे अब अंतिम राउन्ड में नहीं जाना है।

लेकिन यह विचार आते ही उसे मम्मी के शब्द भी याद आ गए, "किसी भी विरोध को एक चैलेन्ज की तरह लेकर, उस चैलेन्ज से बाहर निकलोगी, तभी तुम्हारी प्रोग्रेस होगी।"

... और उसका आत्मविश्वास फिर से जागृत हो गया।" तो क्या हो गया कि मुझे ६ पोइन्टस मिले। इसे मैं एक चैलेन्ज की तरह लेकर, सुधरने का प्रयत्न करूँगी।" ऐसा सोचकर वैभवी अंतिम राउन्ड के लिए तैयार हो गई और बहुत सुंदर परफोरमेन्स दिया।

और वैभवी को कॉम्पिटिशन में फर्स्ट प्राइज़ मिला। वैभवी को ट्रॉफी देते हुए जज ने कहा, "सभी का डान्स बहुत सुंदर था। कॉम्पिटिशन बहुत ज़ोरदार था। किसे फर्स्ट प्राइज़ दिया जाए, यह तय करना हमारे लिए बहुत मुश्किल था। लेकिन वैभवी अंतिम राउन्ड में तुम्हारी मुद्रा और तुम्हारे हाव भाव इतने सुंदर थे कि हम चाहकर भी तुम्हारे मार्क्स नहीं काट पाए।"

यह सुनकर वैभवी बहुत खुश हो गई। उसने मम्मी को स्टेज पर बुलाया। सबके सामने मम्मी के पैर छूए। फिर माइक हाथ में लेकर कहा, "मम्मी, इस जीत का श्रेय आपको जाता है। मुझे आपका टोकना बिल्कुल अच्छा नहीं लगता था लेकिन आज मुझे समझ आया कि मुझे परफेक्ट बनाने के लिए आप मेरे डान्स के डिफेक्ट बताती थीं।"

जब इनाम की ट्रॉफी लेकर, खुशी-खुशी वैभवी और मम्मी घर जाने के लिए निकले, तब वैभवी ने तय किया कि, "आज से कभी किसी के टोकने को या उल्टे कमेन्ट के लिए बुरा नहीं मानेगी। ऐसे टोकने को पॉज़िटिव लेकर, हमेशा सुधरने पर ही ध्यान दूँगी।"

अल्फ्रेड नोबल

यह बात है - अल्फ्रेड नोबल की। अल्फ्रेड नोबल का नाम सुनकर शायद तुम्हें नोबल पीस(शांति) पुरस्कार और दूसरे नोबल पुरस्कारों की बात याद आई होगी। हाँ, उन्हीं अल्फ्रेड नोबल की बात है, जिन्होंने नोबल पुरस्कार की स्थापना की थी और उसके लिए अपनी सारी संपत्ति दान कर दी।

लेकिन जानते हो कि पूरी ज़िंदगी अल्फ्रेड नोबल को विश्वशांति वगैरह के साथ कुछ भी लेना-देना नहीं था। लेकिन एक ऐसी घटना हुई जिसके कारण उनकी ज़िंदगी में बहुत बड़ा बदलाव आया। अल्फ्रेड नोबल एक बहुत बड़े उद्योगपति थे। उन्होंने डाइनामाइट (नाइट्रोग्लिसरीन में से बननेवाला बहुत ही भारी विस्फोटक पदार्थ) की खोज की थी। लेकिन जब उन्होंने यह खोज की थी, तब उन्हें यह ख्याल नहीं था कि निर्माण कार्य के उद्देश्य से खोजी गई चीज़ का उपयोग हिंसा के लिए होगा। अपनी इस खोज के कारण उन्हें बहुत सारी संपत्ति और समृद्धि मिली थी।

एक बार अखबार में उन्होंने अपनी मृत्यु के बारे में पढ़ा। अखबार की हेडलाइन थी - "मौत के सौदागर - अल्फ्रेड नोबल की मृत्यु"

हुआ ऐसा कि अल्फ्रेड के भाई, लुडविग की मृत्यु हुई थी, लेकिन अखबारवालों ने गलती से अल्फ्रेड की मृत्यु जाहिर कर दी।

"मौत के सौदागर - अल्फ्रेड नोबल?" अपनी मृत्यु के ऐसे समाचार पढ़कर अल्फ्रेड को बहुत आघात लगा।

उन्हें लगा, "क्या मेरी मृत्यु के बाद लोग मुझे इस तरह याद करेंगे?" और उस दिन उन्होंने तय किया कि "मैं मेरी बाकी की ज़िंदगी विश्वशांति के लिए बिता दूँगा।"

और उन्होंने अपनी अधिक्तर संपत्ति नोबल पीस(शांति) पुरस्कार के लिए खर्च कर दी।

देखा मित्रों, एक उल्टे(विरोध करते हुए) वाक्य को भी पॉज़िटिव लेने से उनका जीवन विश्वशांति की तरफ मुड़ गया।

चलो खेलें...

१.

९ फर्क ढूंढें।

२.

बिंदुओं को जोड़कर रंग भरें।

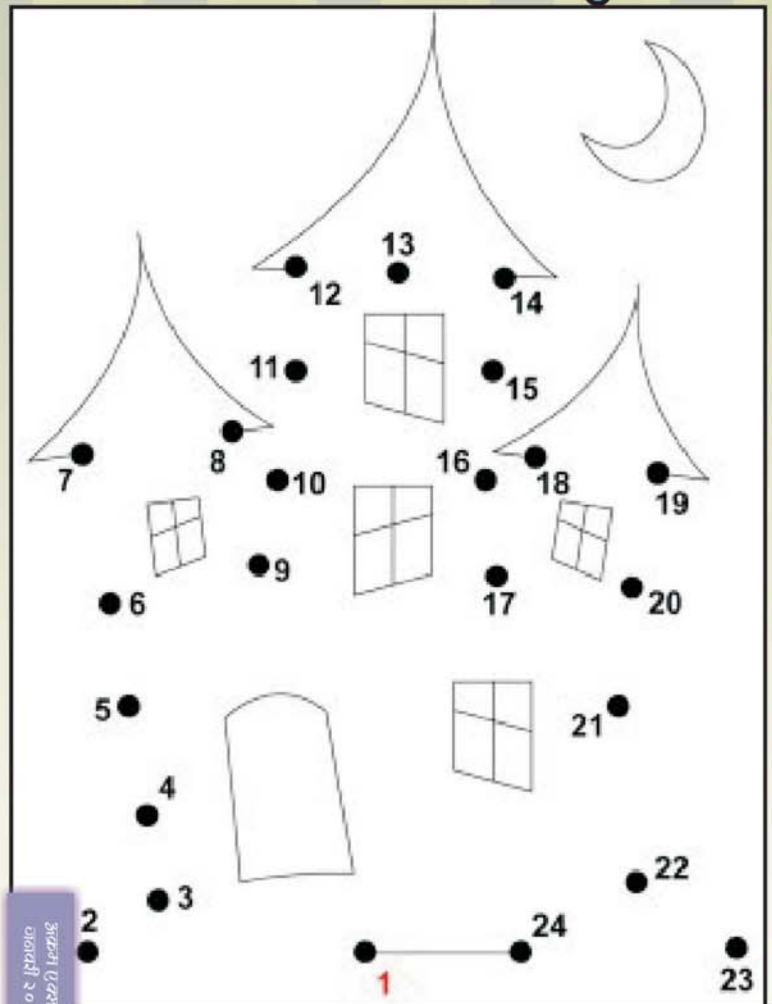

३. दिए गए चित्र को क्रम में लगाएँ।

1 2 3

1 2 3

1 2 3

४.

यहाँ दिए गए चित्र में कितने सेब छुपे हुए हैं, वह ढूँढें।

५.

दी गई आकृति में कोई भी दो दियासलाईयाँ को इस तरह से हटानी है ताकि समय ४.३० दिखें। दियासलाई को एक के ऊपर एक नहीं रख सकेंगे।

सूरदास
आध्यात्मिक मार्ग पर प्रगति करने हेतु सूरदास नामक एक भक्त, गुरु की शरण में आए। अध्यात्म ज्ञान पाने की तमन्ना उन्होंने गुरु को बताई।
हे गुरुदेव, मुझे आत्मा का ज्ञान दीजिए।
ज्ञान प्रदान करने से पहले सूरदास की भूमिका तैयार करने के लिए गुरु ने उन्हें एक आज्ञा दी...
मैं तुम्हें ज्ञान प्रदान करूँ उससे पहले तुम्हें मेरी एक आज्ञा का पालन करना पड़ेगा।
ज्ञान प्राप्ति के लिए मैं कुछ भी करने को तैयार हूँ। आप आज्ञा दें गुरुदेव।
तुम्हारी सभी दैनिक क्रिया करने से पहले तुम ईश्वर का स्मरण करना। एक हफ्ते तक ऐसा करने के बाद तुम नदी में स्नान करके मुझसे मिलने आना।
गुरुदेव की आज्ञा के अनुसार सूरदास ने एक हफ्ते तक हर काम से पहले निष्ठापूर्वक ईश्वर का स्मरण किया।

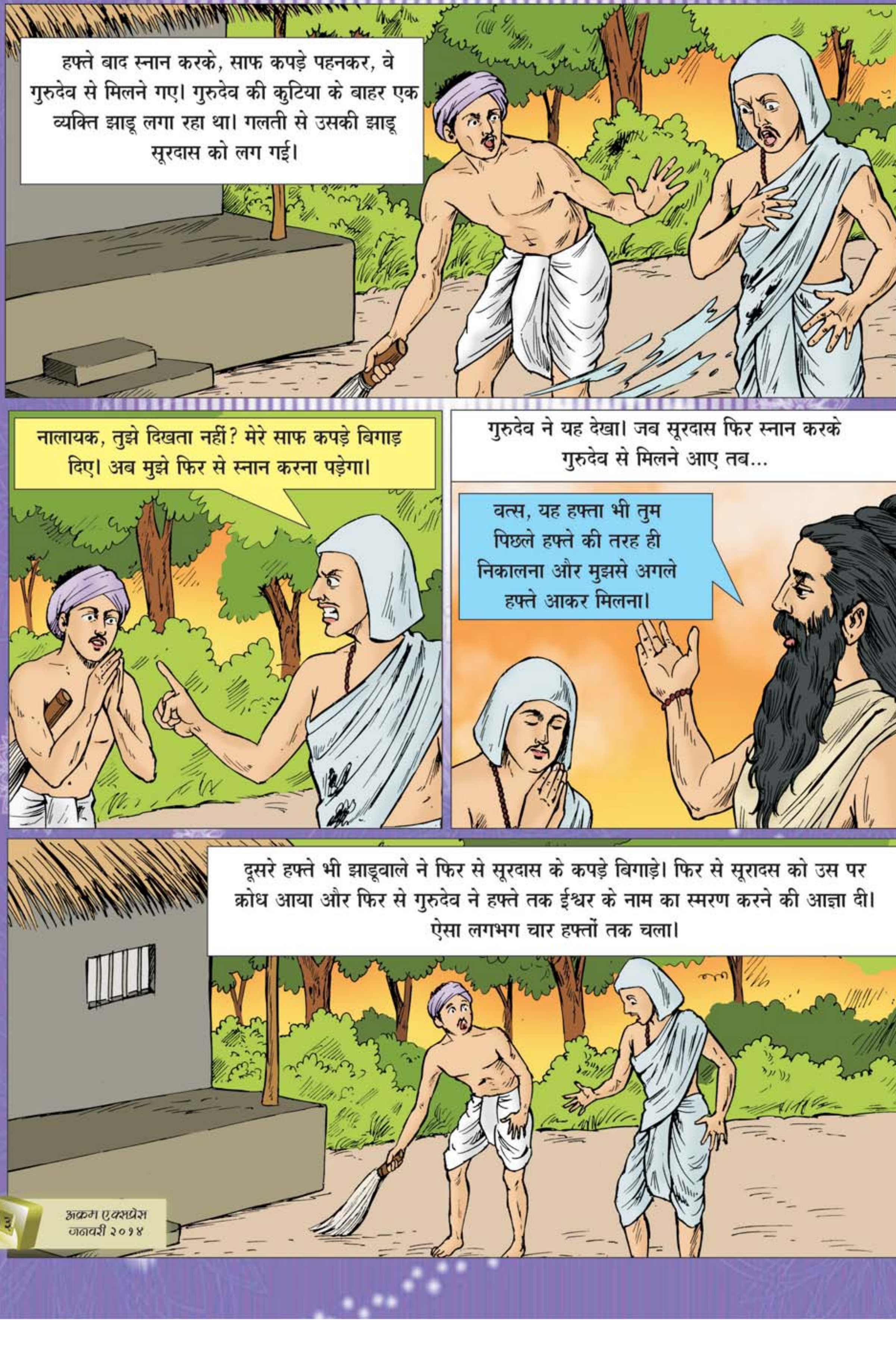
हफ्ते बाद स्नान करके, साफ कपड़े पहनकर, वे गुरुदेव से मिलने गए। गुरुदेव की कुटिया के बाहर एक व्यक्ति झाड़ू लगा रहा था। गलती से उसकी झाड़ू सूरदास को लग गई।
नालायक, तुझे दिखता नहीं? मेरे साफ कपड़े बिगाड़ दिए। अब मुझे फिर से स्नान करना पड़ेगा।
गुरुदेव ने यह देखा। जब सूरदास फिर स्नान करके गुरुदेव से मिलने आए तब...
वत्स, यह हफ्ता भी तुम पिछले हफ्ते की तरह ही निकालना और मुझसे अगले हफ्ते आकर मिलना।
दूसरे हफ्ते भी झाडूवाले ने फिर से सूरदास के कपड़े बिगाड़े। फिर से सूरादस को उस पर क्रोध आया और फिर से गुरुदेव ने हफ्ते तक ईश्वर के नाम का स्मरण करने की आज्ञा दी। ऐसा लगभग चार हफ्तों तक चला।

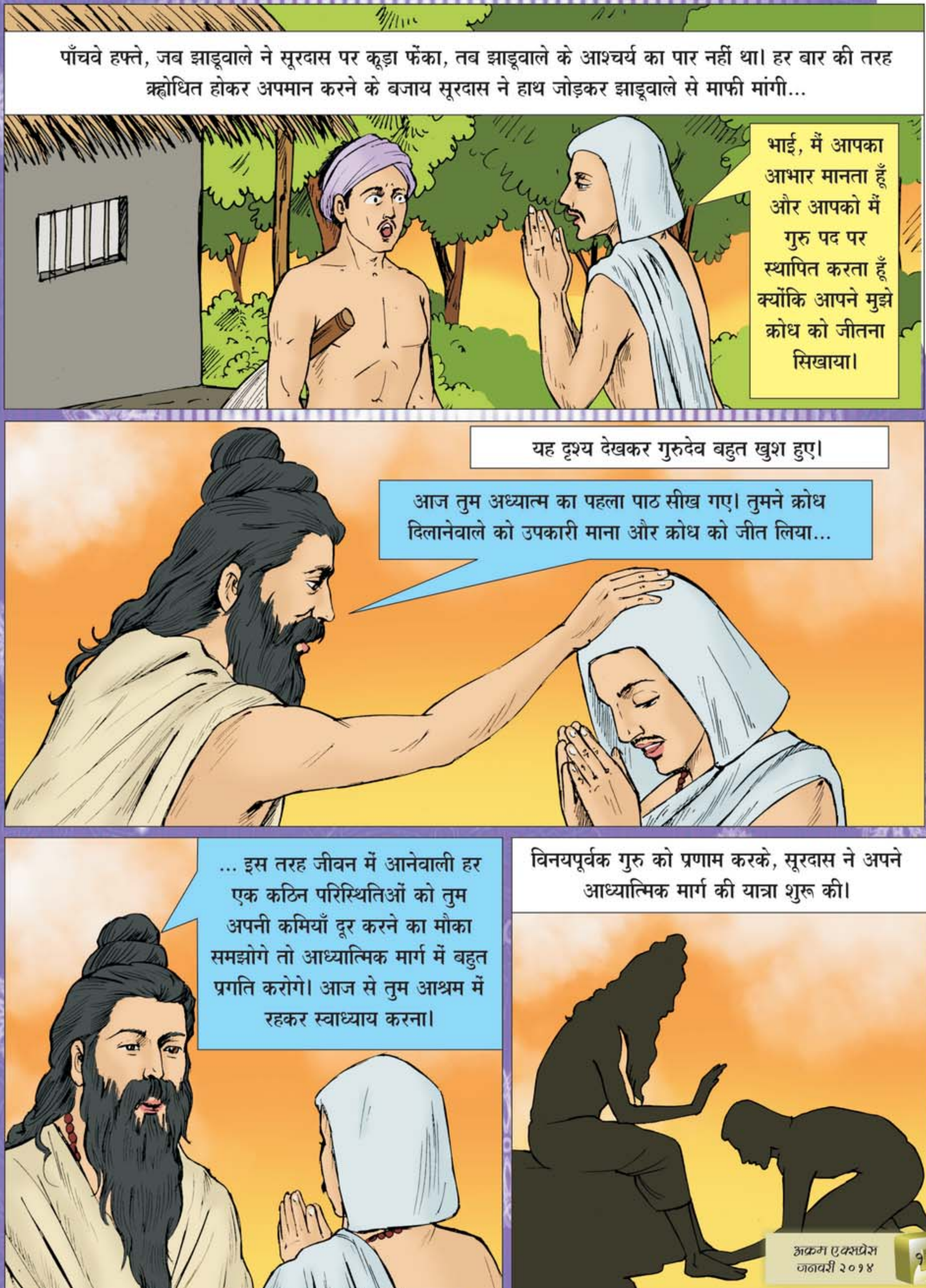
पाँचवे हफ्ते, जब झाड़ूवाले ने सूरदास पर कूड़ा फेंका, तब झाड़ूवाले के आश्चर्य का पार नहीं था। हर बार की तरह क्रोधित होकर अपमान करने के बजाय सूरदास ने हाथ जोड़कर झाड़ूवाले से माफी मांगी...
भाई, मैं आपका आभार मानता हूँ और आपको मैं गुरु पद पर स्थापित करता हूँ क्योंकि आपने मुझे क्रोध को जीतना सिखाया।
यह दृश्य देखकर गुरुदेव बहुत खुश हुए।
आज तुम अध्यात्म का पहला पाठ सीख गए। तुमने क्रोध दिलानेवाले को उपकारी माना और क्रोध को जीत लिया...
... इस तरह जीवन में आनेवाली हर एक कठिन परिस्थितिओं को तुम अपनी कमियाँ दूर करने का मौका समझोगे तो आध्यात्मिक मार्ग में बहुत प्रगति करोगे। आज से तुम आश्रम में रहकर स्वाध्याय करना।
विनयपूर्वक गुरु को प्रणाम करके, सूरदास ने अपने आध्यात्मिक मार्ग की यात्रा शुरू की।

खुली आँखों का सपना

"तो इस कविता की पंक्ति की व्याख्या कौन करेगा?" नीलम टीचर ने अपना चश्मा टेबल पर रखकर क्लास में नज़र घुमाते हुए पूछा।

शशांक ने अपनी नोटबुक का पन्ना खोला, जिसमें उसने कविता की इस पंक्ति की व्याख्या लिखी थी। अपना लिखा हुआ थोड़ा पढ़कर, झट से उसने नोटबुक बंद कर दी। नीलम टीचर की नज़र के कैमरे में शशांक का यह एक्शन कैद हो गया और शशांक के ऐसा करने के पीछे का कारण भी समझ में आ गया।

जवाब देने का अपना पिछला प्रयास शशांक को याद आ गया और मन ही मन वह रो पड़ा। बहुत ही उत्साह से वह जवाब देने गया, लेकिन हर बार की तरह उस दिन भी उसकी जीभ अकड़ गई।

"ट...ट...टीचर मु... मुझे मा...मालूम है,"

शशांक का वाक्य पूरा हो, उससे पहले ही पूरी क्लास ज़ोर से हँस पड़ी। रिसेस के समय केन्टिन में भी उसने कुछ बच्चों को अपनी नकल करते हुए सुना और उसी समय साहित्य के क्षेत्र में केरीयर बनाने का उसका सपना टूट गया।

क्लास के बाद नीलम टीचर ने शशांक की बेंच के पास आकर कहा, "स्कूल के बाद मुझे स्टाफ रूम में मिलने आना।"

शशांक को क्लास रूम में आते हुए देखकर नीलम टीचर ने एक प्रिन्ट आउट निकाला और उसके सामने रखा।

"मु...झे इससे क्या ले...ले... लेना-देना?" शशांक ने टीचर से पूछा।

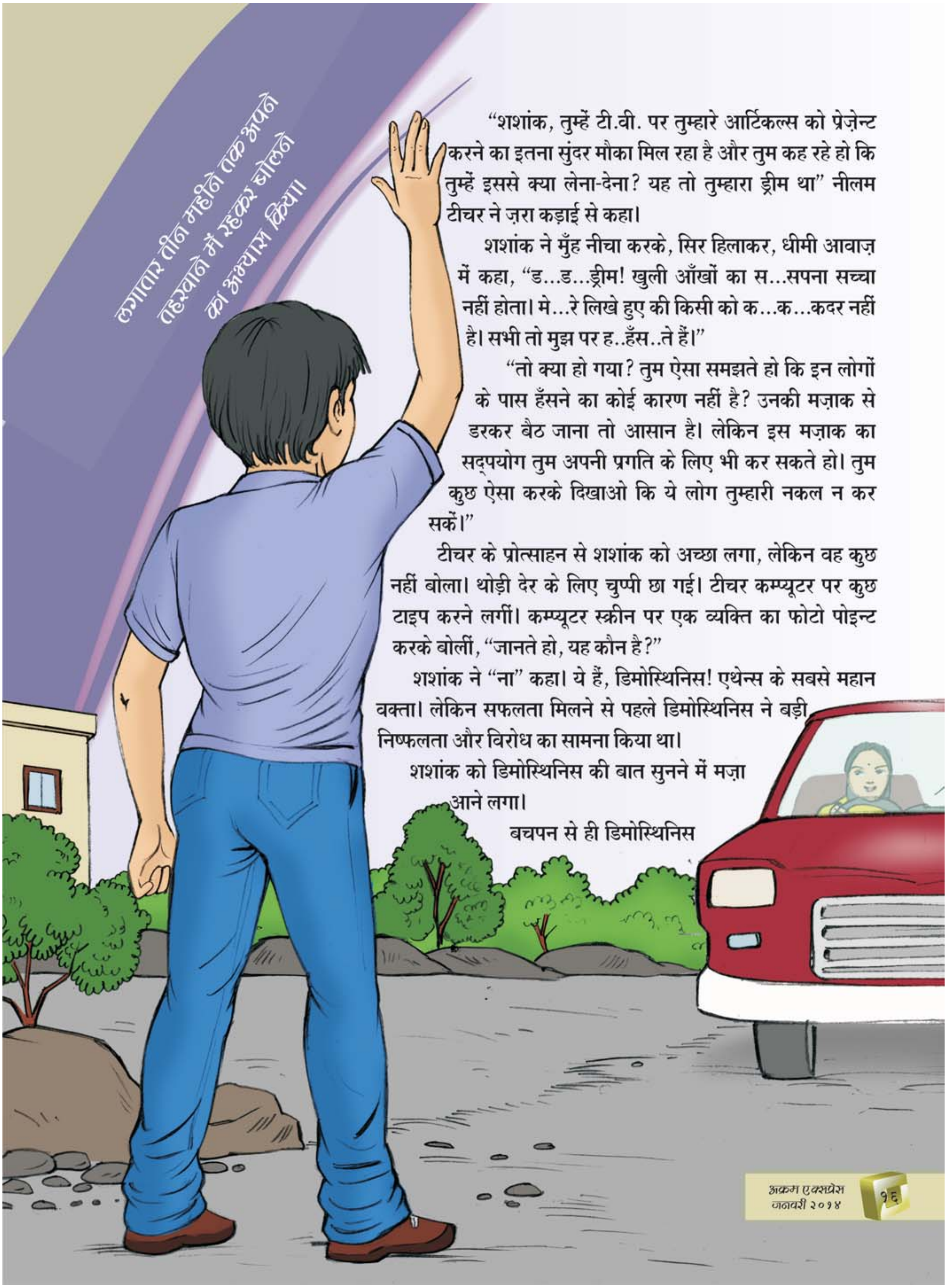

"शशांक, तुम्हें टी.वी. पर तुम्हारे आर्टिकल्स को प्रेज़ेन्ट करने का इतना सुंदर मौका मिल रहा है और तुम कह रहे हो कि तुम्हें इससे क्या लेना-देना? यह तो तुम्हारा ड्रीम था" नीलम टीचर ने ज़रा कड़ाई से कहा।

शशांक ने मुँह नीचा करके, सिर हिलाकर, धीमी आवाज़ में कहा, "ड...ड...ड्रीम! खुली आँखों का स...सपना सच्चा नहीं होता। मे...रे लिखे हुए की किसी को क...क...कदर नहीं है। सभी तो मुझ पर ह..हँस..ते हैं।"

"तो क्या हो गया? तुम ऐसा समझते हो कि इन लोगों के पास हँसने का कोई कारण नहीं है? उनकी मज़ाक से डरकर बैठ जाना तो आसान है। लेकिन इस मज़ाक का सद्‌पयोग तुम अपनी प्रगति के लिए भी कर सकते हो। तुम कुछ ऐसा करके दिखाओ कि ये लोग तुम्हारी नकल न कर सकें।"

टीचर के प्रोत्साहन से शशांक को अच्छा लगा, लेकिन वह कुछ नहीं बोला। थोड़ी देर के लिए चुप्पी छा गई। टीचर कम्प्यूटर पर कुछ टाइप करने लगीं। कम्प्यूटर स्क्रीन पर एक व्यक्ति का फोटो पोइन्ट करके बोलीं, "जानते हो, यह कौन है?"

शशांक ने "ना" कहा। ये हैं, डिमोस्थिनिस! एथेन्स के सबसे महान वक्ता। लेकिन सफलता मिलने से पहले डिमोस्थिनिस ने बड़ी निष्फलता और विरोध का सामना किया था।

शशांक को डिमोस्थिनिस की बात सुनने में मज़ा आने लगा।

बचपन से ही डिमोस्थिनिस

ने वक्ता बनने का सपना देखा था। एक बार एथेन्स की किसी सभा में उसने बोलने का प्रयास किया। उसका प्रयास इतना असफल हुआ कि उसे सभा में से मुँह छिपाकर भागना पड़ा।

यह सुनकर शशांक को मन ही मन में डिमोस्थिनिस के लिए हमदर्दी हुई। टीचर ने बात आगे बढ़ाई, लेकिन डिमोस्थिनिस किसी की मज़ाक या विरोध से हार मानकर बैठनेवालों में से नहीं थे। डिमोस्थिनिस जानते थे कि उनके पास सफल वक्ता के गुण नहीं हैं। वे अपनी कमियों से परिचित थे। इतना ही नहीं, लेकिन लोगों ने उनकी जिन कमियों की मज़ाक उड़ाई उस पर भी उन्होंने ध्यान दिया और उन कमियों को जीत लेने का उन्होंने निश्चय किया। उसके बाद अपने ध्येय को पाने के किए उन्होंने दिन-रात एक कर दिए।

लगातार तीन महीने तक अपने तहखाने में रहकर बोलने का अभ्यास किया। उनकी जीभ कई बार बोलते बोलते अटक जाती थी। इस कमी को दूर करने के लिए वे मुँह में कंकड़ रखकर बोलने का अभ्यास करते। आवाज़ में बल आए उसके लिए कई बार समुद्र किनारे जाकर, मुँह में कंकड़ डालकर लहरों की आवाज़ से भी ज्यादा ज़ोर से बोलने का अभ्यास करते। बोलते समय वे चेहरे के हाव भाव भी आईने में देखकर जाँच करते। इस तरह, अच्छा वक्ता बनने के लिए वे दिन-रात संघर्ष करते।

और अंत में, एक दिन उन्हें उनके अभ्यास का फल मिला। और वे एथेन्स के सबसे महान वक्ता बने।

डिमोस्थिनिस का ऐसा प्रेरणादायक वृतांत सुनकर शशांक को हिम्मत आई। अब टीचर को आगे कुछ कहने की ज़रूरत नहीं थी।

"ट...टीचर मैं यह प...प...प्रिन्ट आउट ले जाऊँ?"

"श्योर" टीचर ने संक्षेप में जवाब दिया।

नीलम टीचर ने घर जाने के लिए अपनी कार स्टार्ट की, तभी उनकी नज़र शशांक पर पड़ी। वह स्कूल के कम्पाउन्ड में से कंकड़ बीनकर अपने पॉकेट में रख रहा था।

"बेस्ट ऑफ लक शशांक" हाथ हिलाकर टीचर ने ज़ोर से बोला।

टीचर के सामने हाथ वेव करते हुए, शशांक ने टीचर को एक बड़ी सी स्माइल दी।

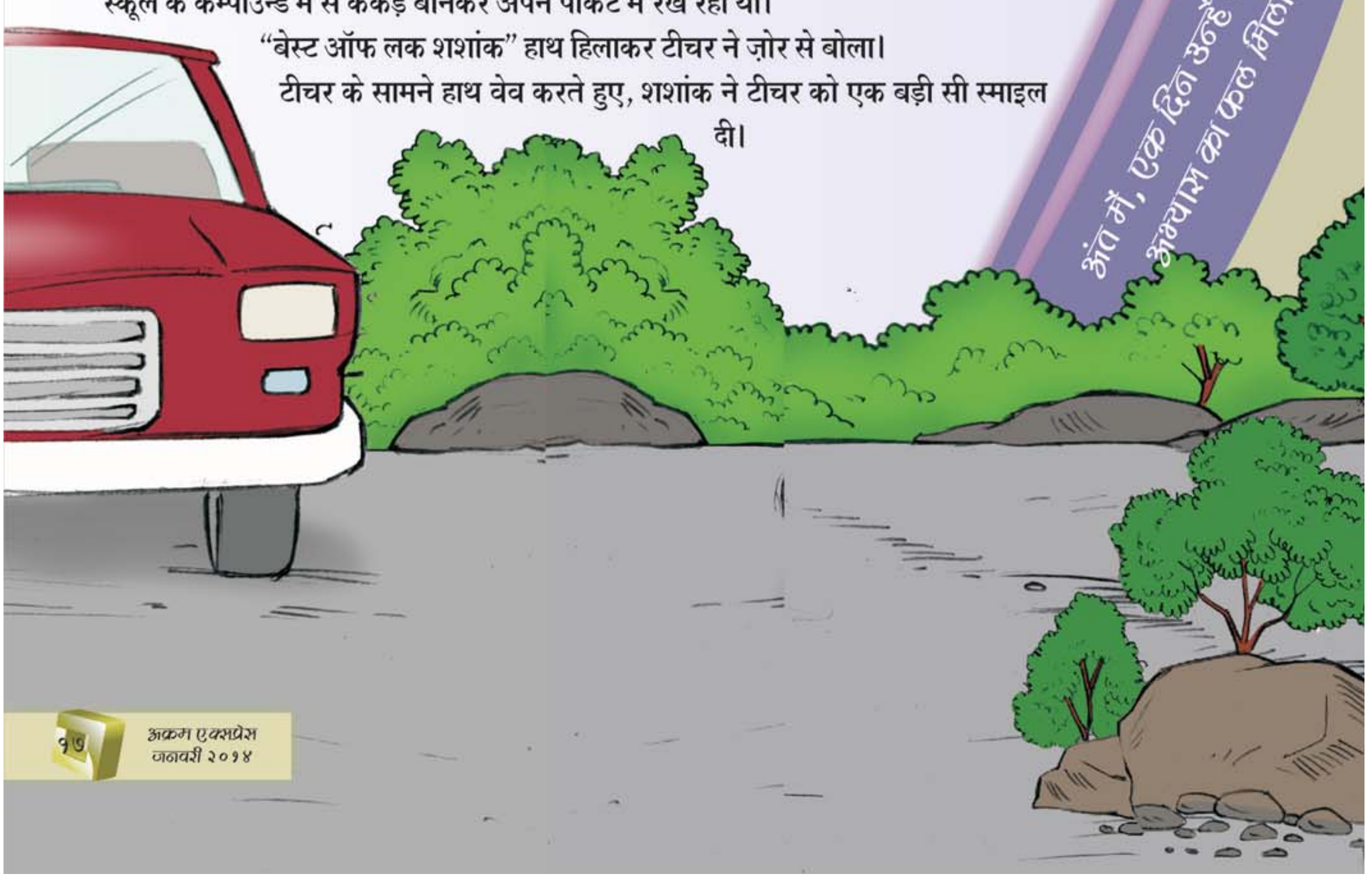

अपने आपको परखकर देखें!

नीचे दिए गए वाक्यों में नंबर कोड के जगह पर योग्य जवाब ढूँढकर भरें।

१=उ	२=बु	३=आ	४=वि	५=प्र	६=पॉ	७=प	८=निं	९=रो	१०=दा
	११=ई	१२=ति	१३=रु	१४=का	१५=दा	१६=ज़ि	१७=का	१८=ना	
१९=क्र	२०=टि	२१=श्री	२२=र	२३=व	२४=ध	२५=म	२६=ग	२७=ण	२८=ट
				२९=रा					

१. विरोध करनेवालों का तो (१) (७) (१४) (२२) मानना चाहिए।

२. (३) (११) (१८) हमें, हम जैसे दिखाई देते हैं, वैसा दिखाता है।

३. विरोध करनेवालों के प्रति यदि गलत सोच लिया हो तो उसका (५) (१२) (१९) (२५) (२७) करना चाहिए।

४. फ्रिक्शन (५) (२६) (१२) के लिए हितकारी है।

५. विरोध करनेवालों का (६) (१६) (२०) (२३) लेकर सोल्यूशन लाना चाहिए।

६. जिसे प्रगति करनी हो, उनके लिए ये (१३)(१७)(२३)(२८) डालनेवाले, (८) (१०) करनेवाले और (४) (९) (२४) करनेवाले महान उपकारी है।

७. परम पूज्य (१५) (१५) (२१) के पास विरोध करनेवालों का उपकार मानने की अद्‌भुत दृष्टि थी।

८. अगर विरोध करनेवाले व्यक्ति का हम (२) (२९) सोचेंगे तो उसमें उसका नुकसान नहीं है। अपने ऊपर ही (३) (२३) (२२) (२७) आएगा।

जवाबः
१. उपकार
२.आईना
३.प्रतिक्रमण
४. प्रगति
५.पॉज़िटिव
६.रुकावट,निंदा,विरोध
७.दादाश्री
८.प्रतिक्रमण
९. बुरा, आवरण

પઝલ के जवाब

१.

२.

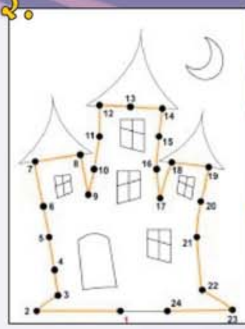

५.

३.

४.
९ सेब

पूज्य नीरूमाँ के जन्म दिन पर YMht Girl द्वारा लिखा और गाया गया भक्तिपद

रात पड़े ने जरा आँख मींचु
मने शमणामां माँवडी देखाय
जरा अंतरना झरुखे थी झाखुं
ने मने हँसता नीरू माँ देखाय
रोज रोज मले ए स्वप्नमां मने
अने गप्पा मारीए कई केटलाय
केवी ते एनी कारूण्यता
ने आँखों मां वीतरागता
मुख पर ए हास्य
अने केवु अपार वात्सल्य छलकाय

जरा अंतरना...

कंईक प्रश्न थाय मनमां ने
हूँ नानु बालक बनी जाऊँ
समाधान आपे ए एटला सचोट
जाणे वाणीमां फूलडा वेराय

जरा अंतरना...

व्यवहारमां आवता
हालता ने चालता
जरा सहेज पण भटकी जाऊँ
टपली मारे ए प्रेम थी एवी
फरी स्वप्नेय ए बाजु ना जाऊँ

जरा अंतरना...

व्यवहारमां तो प्योर बनावे
साथे ज्ञाननी पण समजण आपे
सेवाना पाठो तो मने रोज भणावे
केवी महान "माँ" थी केड़वाऊँ

जरा अंतरना...

टकोरा मारीने मने घड़े एवी
प्रेमरस केवो ते पायो
हजी वातो करूँ छूँ एनी जोड़े
त्यां तो मारी "माँ" नो देहविलय थाय
निर्वाण करी तमे तो सिधाव्या विदेहे
हवे मारूँ शुं थशे?
पल पल आवा विचारो आवे
विरह माराथी ना सहेवाय

जरा अंतरना...

त्यां तो आव्या फरी मारी सामे
ए ज करुणा अने वीतरागता
हूँ तो जोई ने ज केवी हरखाई

जरा अंतरना...

हाथ फेरवी ने माथे कहे
अहीं ज तो छूँ हूँ
आ ज मारा महात्मा अने आ ज मारा बालको
एने छोड़ीने हूँ क्या जाऊँ?

जरा अंतरना...

स्थूलदेहे तो दूर छे आजे
पण सूक्ष्ममां न खोट एनी साले
हवे तो पूज्यश्री सामे जोऊँने
मने एमांय मारी "माँ" देखाय

जरा अंतरना...

हमणां ज तो वात करीने हजी
कहे छे मूंझाशो नहीं हों कोई
प्रश्न कोई थाय ने तो आवजो पूज्यश्री पासे
तमने क्यारेय मारी खोट नहीं वर्ताय

जरा अंतरना...

आजे य एटलुं ज कहे छे, साथे ज छूँ हूँ
बस दादा नुं काम कर्ये जाव

जरा अंतरना...

सिद्धि सवैया, भावनगर
उम्र : १९

Akram Express

January 2014
Year : 1, Issue : 10
Conti. Issue No.:10

BALVIGNAN
Fun 'n' Gnan with Dada

Date of Publication On 8th Of Every Month
RNI No GUJHIN/2013/53111
Posted at Adalaj Post office
on 8th of every month

HAPPY BIRTHDAY

भावनगर में पूज्य नीरूमाँ के बर्थ डे के दिन **GNC Day** मनाया गया। बच्चों और युवकों ने नाटक और भक्तिपद पर डान्स प्रस्तुत किए और पूज्यश्री के साथ फोटो खींचे। इसके अलावा पूज्यश्री ने **GNC** केक काटकर पूज्य नीरूमाँ का बर्थ डे मनाया।

अक्रम एक्सप्रेस के सदस्यों के लिए सूचना

१. आपकी वार्षिक सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपकी इस महीने में आई हुई अक्रम एक्सप्रेस के कवर के लेबल पर लगे हुए मेम्बरशीप नं. के बाद **#** हो तो यह आपकी अंतिम अक्रम एक्सप्रेस है। उदा. **AGIA4313#** और यदि लेबल पर मेम्बरशीप नं. के बाद **##** हो तो अगले महीने में आपकी सदस्यता समाप्त होगी। उदा. **AGIA4313##** अक्रम एक्सप्रेस रिन्यूअल की जानकारी संपादकीय पेज पर दी गई है।

२. यदि किसी महीने का अक्रम एक्सप्रेस आपको नहीं मिला हो तो नीचे दी गई माहिती फोन नं. ८१५५००७५०० पर **SMS** करें।

१. कच्ची पावती नंबर या **ID No.**, २. पूरा एड्रेस पिन कोड के साथ, ३. जिस महीने का मैगज़िन नहीं मिला हो, उस महीने का नाम।

Printer, Publisher and Owner - Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation, Editor - Dimple Mehta, Printing Press **Amba offset:-** Parshwanath Chembers, Usmanpura, Ahmedabad-14 and published at Mahavideh Foundation, Simandhar City, Adalaj-382421.Dist-Gandhinagar.